अच्छे मुसलमान की खूबियां 75

बिस्मिल्लाहिर्ररहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहम वाला है।

सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर।

व बअद।

यूं तो हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वह लोगों को इस्लाम की दावत दे और ऐसा किरदार व अमल लोगों के सामने पेश करे कि जिसे देख कर ग़ैर मुस्लिम हज़रात भी कहें कि वाक़ई मुसलमान और उनका दीन (इस्लाम) अम्न पसन्द हैं, लोगों में इन्साफ़ क़ायम करने वाला है।

मगर आज हमारा हाल यह हो गया है कि लोग हमारा नाम सुनते ही अपने माथे पर बल ले आते हैं और हमारे अख़लाक़ व किरदार देखकर हमसे दूरी बना लेते हैं या नफ़रत करने लगते हैं। वजह सिर्फ़ इतनी है कि हमारे अख़लाक़ व किरदार अच्छे मुसलमान जैसे नहीं हैं। बात बे बात झूट बोलना, गाली–गलौच करना, वादा ख़िलाफ़ी करना और लड़ना–झगड़ना जैसे आज हमारी पहचान बन गई है। हम में से अक्सर यह नहीं जानते कि इस्लाम की अख़लाक़ी तालीमात क्या हैं? एक मुसलमान को लोगों के साथ किस तरह के मामलात करना चाहिये?

इस फ़ोल्डर के ज़रियें हम एक अच्छे मुसलमान की उन खूबियों को जानने की कोशिश करेंगें जो अगर हमारी ज़िन्दगी में आ जाएं तो हमारे किरदार को देख कर ही लोग इस्लाम को हक़ और सच्चा मानने पर मजबूर हो जाएं। उसे गले से लगा लें, व अपना ले ताकि अल्लाह उनसे भी राज़ी हो जाए और वो भी अल्लाह की जन्नत के वारिस बन जाऐं। आइये अब जानते हैं कि वो कौन सी खूबियां हैं? जो एक मुसलमान में होना चाहियें

(1) **इख़लासः**—बन्दें की इबादत व आमाल में असल चीज़ इख़लास है यानि हर काम को सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए करना। चाहे वह काम नमाज़, रोज़ा, हज व ज़कात हों या कोई दुनियावी मामला इसलिए कि इख़लास इस्लाम की बुनियाद है और बन्दे के आमाल की कुबूलियत के लिए पहली शर्त है। इख़लास का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि बन्दा अपने अन्दर जब इख़लास पैदा कर लेता है तो अल्लाह की इबादत और दुनिया वालों के साथ अपने अच्छे बर्ताव को जारी रखता है। चाहे दुनिया वाले उसके अच्छे कामों की तारीफ़ करें या न करें। वह लोगों के साथ भलाई करना नहीं छोड़ता क्योंकि उसकी नीयत ख़ालिस है। अल्लाह को राज़ी करने की है न कि लोगों को

Please purchase

खुश करने की। चूंकि "इख़लास ईमान की रूह है।" **(बैहक़ी & सही तग़ीर्ब व तरहीब – 3)** कोई शख़्स अपने में जब इख़लास पैदा कर लेता है तो वह देर ही से सही लोगों का चहेता बन जाता है। बिना इख़लास के कोई भी अमल चाहे वह कितना ही ज़्यादा क्यों न हो कोई फ़ायदा नहीं देता जबकि एक मामूली सा अमल जो इख़लास के साथ किया जाए बह बन्दें को जन्नत में पहुंचा देता है। इसलिए कि अल्लाह उन्हीं आमाल को क़ुबूल करता है जो सिर्फ़ उसकी रज़ा के लिए किये जाऐं हदीसे क़ुदसी है "अल्लाह तआला फ़रमाता है मैं शरीक किये जाने वालों में सबसे बेहतर हूँ। तो जो मेरे साथ किसी को शरीक करेगा, वह मेरे शरीक के लिए है। ऐ लोगो। अपने आमाल को ख़ालिस कर लो। बेशक! अल्लाह उन्हीं आमाल को क़ुबूल करता है जो उसी के लिए ख़ालिस हों। **(बैहक़ी – सही तग़ीब व तरहीब – 7)** इबादत सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए करना चाहिये। एक शख़्स अगर किसी को दिखाने के लिए नमाज़ पढ़े और अल्लाह से सवाब भी चाहे, हाजी कहलाने के लिए हज करे और चाहे कि अल्लाह भी खुश हो या लोगों में नामवरी के लिए बहुत सद्का व खैरात करें और चाहे कि अल्लाह से अज्र मिले तो ऐसी इबादात या आमाल करने वाले के ईमान में कमी है और अल्लाह तआला उन इबादात पर सवाब नहीं देता जिनमें इख़लास न हो।

(2) **तक़वाः**—तक़्वे का मतलब है अल्लाह और यौमे आख़िरित के डर से बन्दे का हर गुनाह से बचे रहना। तक़्वा ही इन्सान को हर तरह के धोखे व दग़ा के काम से दूर रखता है और फ़राइज़ व वाजिबात को सही तौर पर अदा कराता हैं ।

इब्ने अब्बास रज़ि. 'मुत्तक़ीईन' की तफ़्सीर में बयान करते हैं "वोह मोमिन जो शिर्क से बचते हैं और अल्लाह की इताअत वाले काम करते हैं। **(तफ़सीर–तबरी)**

तक़्वा अल्लाह के वलीयों (दोस्तों) की पहचान हैं। इसलिए कि यह वोह लोग हैं जो "अल्लाह पर ईमान लाते हैं और अल्लाह से डरते हैं।" **(सूरह युनुस – आयत – 63)** मगर कुछ लोग आज वली उसे समझते हैं जो किसी मज़ार या दरगाह पर मुजावर बन कर बैठा हो चाहे नमाज़ एक वक़्त की भी न पढ़े। बल्कि अल्लाह की रज़ा जोई के कामों से बहुत दूर हो। जिसमें गुनाहों से बचने का जज़्बा बिल्कुल न हो बल्कि अल्लाह पर और आप सल्ल. की रिसालत व यौमे आखिरत पर ईमान तक न रखता हो या जिसमें ईमान ज़र्रा भर भी न हो। या फिर उसे वली अल्लाह मानते हैं जिसकी क़ब्र पर गुम्बद बना हो और जहां मेंला लगता हो जबकि अल्लाह ने जिसे वली कहा उसकी यह खूबी बतलाई कि वह अल्लाह से डरने वाला, आख़िरत के दिन पर ईमान रखने वाला और गुनाहों से बचने व दूर रहने वाला होता है।

आप सल्ल. बख़्शे – बख़्शाए होने के बावजूद रात में इतनी देर नमाज़ में खड़े रहते थे कि पैरों में वरम आ जाता लेकिन आप ने कभी यह नहीं कहा कि मुझे नमाज़ पढ़ने या अल्लाह की इबादत करने की ज़रूरत नहीं। मगर आज के यह नशा खोर, शिर्क व बिदअत में लत

e-PDF Converter and Creator' on http://www.e-pdfconverter.com

– पथ शैतान के वली खुद को अल्लाह का वली ज़ाहिर करते हैं और उस पर जुराअत यह कि खुद तो अल्लाह की इबादत करते नहीं दूसरों को भी शिर्क की तरफ़ धकेलते हैं।

तक़वा इख़्तियार करने का फ़ायदा यह होगा कि "अल्लाह मुश्किल से निकलने का रास्ता आसान कर देगा और ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा जहां से वह गुमान भी नहीं कर सकता।" **(तलाक़ – आयत – 03)** "जो अल्लाह की मग़फ़िरत और जन्नत की उम्मीद में गुनाहों से बचता है अल्लाह उसे ऐसी जन्नत की, जिसकी चौड़ाई आसमान व ज़मीन के बराबर है, की खुश ख़बरी देता है।" **(आले इमरान – 133)**

(3) सब्र :– एक अच्छा मुसलमान कुरआनी तालीमात, अपनी निजी ज़िन्दगी में और लोगों तक पहुंचाने की राह में आने वाली रूकावटों व मुश्किलात पर सब्र करता है। कुछ लोग यह समझते हैं कि आज के ज़माने में सब्र करना बेकार है हालांकि हक़ीक़त में सब्र इन्सान की मुसीबतों को आसान कर देता है और उसे जन्नत के क़रीब करता है। जैसा कि इर्शादे बारी है "हमेशा रहने के बाग़ात (जन्नत) जहां यह खुद जाएंगे और इनके बाप–दादाओं और बीवियों व औलाद में से भी जो सालेह (नेक) होंगें उनके पास फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके पास आ कर कहेंगें तुम पर सलाम हो सब्र के बदले क्या ही अच्छा बदला है इस दारे आख़िरत का।" **(रअद–आयत–23–24)** मुश्किलात पर सब्र करने से ज़िन्दगी आसान हो जाती हैं जैसा कि आप सल्ल. ने फ़रमाया "मदद सब्र के साथ है और तक्लीफ़ से दूरी मुसीबत के साथ हैं। बेशक सख़्ती के साथ आसानी है।" **(सही अल जामेअ–लिलबानी – 6806)**

(4) माफ़ करना:–एक अच्छे मुसलमान के साथ जब ज़्यादती की जाती है तो वह माफ़ कर देता है जबकि बदला लेना इस्लाम में जाइज़ है। लेकिन बदला उतना ही हो जितना कि ज़ुल्म किया गया है। अगर कोई उससे ज़्यादा बदला लेता है तो वह खुद ज़ुल्म करने वाला है। "माफ़ करने पर सवाब मिलता है इसलिए माफ़ कर देना ही बेहतर है।"**(शूरा–आयत – 40)** अल्लाह के रसूल सल्ल. और सहाबा किराम रज़ि. भी जब मुश्रिकीन या अहले किताब उन पर ज़ुल्म करते तो उनसे दर गुज़र करते थे और उनकी दी हुई तक्लीफ़ों पर सब्र करते थे।" **(बुख़ारी–2490)**

इर्शादे बारी भी है "चाहिये कि वोह माफ़ करें और दर गुज़र करें। क्या तुम यह पसन्द नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दें।" **(नूर–आयत–22)** एक अच्छा मुसलमान यह नहीं सोचता कि अगर मैं माफ़ कर दूंगा तो छोटा हो जाऊंगा और लोग मुझे ताना देंगें। इसलिए कि असल ज़िल्लत तो अल्लाह के नज़दीक ज़लील होना है। "अल्लाह तआला माफ़ करने वालों की इज़्ज़त में इज़ाफ़ा ही करता है।" **(मुस्लिम – 2588)**

(5) हया (शर्म):– हक़ीक़ी शर्म यह है कि बन्दा अल्लाह की नेमतों को याद रखे, गुनाहों से बचे और अल्लाह की नाफ़रमानी न

to remove this message.

करें। इसे यूं समझिये कि जब बन्दे पर किसी का एहसान हो और वह एहसान करने वाले का ही बुरा चाहे या नुक़्सान कर दे या उसे किसी तरह की तक्लीफ़ दे तो वह किस मुंह से अपने पर एहसान करने वाले का सामना करेगा बल्कि उसे सामना करते हुए शर्म आएगी। लिहाज़ा अल्लाह जिसके अनगिनत एहसानात का बन्दा हर लम्हें व हर क़दम पर मोहताज है, वह अल्लाह का ना फ़रमान बन कर, उसके अहकामात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर के हयादार नहीं हो सकता बल्कि वह बे हया कह लाएगा। दुनियावी मामलात में भी ऐसा शख़्स बेशर्म कहलाता है। हया मोमिन की पहचान है और एक अच्छा मुसलमान हयादार होता हैं अगर बन्दें में हया न हो तो वह लोगों में बदनाम हो जाता है। अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''इस्लाम का पसन्दीदा अख़लाक़ हया है।'' **(सही अल जामेअ – 2149 & इब्ने माजा)**

''हया सिर्फ़ खैर (भलाई) ही लाती है।'' **(बुखारी – 5766 & मुस्लिम – 37)** ''बेहयाई जिस चीज़ में होती है, उसे एबदार बना देती है और हया जिसमें होती है उसे ज़ीनत (सजा–संवार) देती है।'' **(सही अल जामेअ–5655 & तिर्मिज़ी)** और यह कि ''ईमान की सत्तर से ज़्यादा शाखें है और हया ईमान की शाखों में से (एक) है।'' **(मुस्लिम – 35)**

(6) नर्मी व ख़ाकसारीः– आजिज़ी व नर्मी अल्लाह के अच्छे बन्दों की खूबी है और घमन्ड व गुरूर मुश्रिकीन और फिरऔनियों की निशानी व नमरूद का अमल है। जिन्होंने गुरूर व तकब्बुर की वजह से अल्लाह की इताअत व इबादत का इन्कार किया। इर्शादे बारी है ''रहमान के बन्दें तो वोह हैं जो ज़मीन पर नर्मी से चलते हैं।'' **(फ़ुरक़ान–आयत–63)** आजिज़ी व इन्कसारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला शख़्स बज़ाहिर कमतर दिखाई देता है। जबकि वह अल्लाह के नज़दीक बुलन्द दर्जे वाला होता है। जैसा कि आप सल्ल. ने फ़रमाया ''जो अल्लाह के लिए नर्मी व इन्कसारी इख़्तियार करता है अल्लाह तआला उसे बुलन्दी अता करता है।'' **(मुस्लिम–2588)** नर्मी व ख़ाकसारी का न होना इन्सान को ज़ालिम बना देता है। वह खुद को दूसरों से बेहतर समझने लगता है। फिर उसकी यह बुराई सारे समाज को बर्बाद कर डालती है। गुरूर व घमन्ड की वजह से लोग दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं। इसी गुरूर की वजह से बन्दे की अच्छी खूबियां भी उससे रूख़सत हो जाती हैं। आप सल्ल. ने फ़रमाया कि ''अल्लाह तआला ने मेरी तरफ वहयी की कि मैं नर्मी इख़्तियार करूं। यहां तक कि कोई किसी पर फ़ख़्र न करें और न किसी पर ज़ुल्म करे।'' **(मुस्लिम–2825 & सही अल जामेअ–1725)**

(7) अदल व इन्साफ़ः– इन्साफ़ करना और इन्साफ़ का साथ देना इस्लाम की तालीम है और एक अच्छे मुसलमान की पहचान भी। क्योंकि इन्साफ़ का साथ देते वक़्त कई दफ़ा मुश्किलात का सामना करना पड़ता है। कभी सामने भाई–बहन या वाल्दैन तो कभी दोस्त या रिश्तेदार होते हैं, ऐसे में इन्साफ़ करना आसान नहीं होता। मगर ऐसे मौक़ों पर भी इस्लाम इन्साफ़ पर क़ायम रहने और हक़ बात कहने की

Please purchase 'e-PDF

नसीहत करता है। फ़रमाने बारी तआला है "जब तुम बात करो तो इन्साफ़ की करों अगर चे वोह रिश्तेदार हों।" **(अनआम–आयत–112 & निसा–35)** और यह कि "तुम जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करों" **(निसा–आयत–58)**

मगर आज आम तौर पर होता यह नज़र आता है कि लोग झूटे गवाह बन कर खड़े हो जाते हैं। अगर सामने वाले से दुश्मनी हो और मुन्सिफ़ बना दिये जाएं तो ना इन्साफ़ी का फ़ैसला करते हैं। यह बुराई एक अच्छे मुसलमान में नहीं होती। इसलिए कि अल्लाह तआला का इर्शाद है "ऐ ईमान वालों तुम इन्साफ़ के साथ गवाही देने वाले बन जाओं और किसी की दुश्मनी तुमको ना इन्साफ़ी पर न उभारे, तुम इन्साफ़ करो। यह तक़वे से ज़्यादा करीब है।" **(माइदा–आयत–08)**

(8) इस्तेक़ामत इख़्तियार करना :– इस्तेक़ामत का मतलब यह है कि बन्दा दीने इस्लाम के हर हिस्से पर अमल करने की कोशिश करे। चाहे इस राह में उसे कितनी ही मुश्किलात का सामना करना पड़े। अपनी या किसी और की ख़्वाहिशात की पैरवी न करे। जैसा कि इर्शादे बारी तआला है "क़ायम रहो, जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया और उन (लोगों) की ख़्वाहिशात की पैरवी न करो।" **(शूरा–15)** और यह कि "ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ।" **(बक़रह–आयत–208)** इन्सान दो तरह के हालात से गुज़रता है।
(1) उसके पास माल व दौलत की बहुतायत हो जाए कि वह फ़िज़ूल खर्ची में पड़ जाए और इस्लाम पर जमें रहना उसके लिए मुश्किल हो जाए और गुनाह करना उसके लिए आसान हो जाए।
(2) दूसरी हालत यह कि उसके पास माल व दौलत की कमी हो कि वह अहलो–अयाल के लिए रोटी–रोज़ी का इन्तेज़ाम करने में इतना खो जाए कि अल्लाह की इबादत और इस्लामी अहकामात पर पूरा अमल नहीं करता बल्कि कभी ऐसा भी होता है कि अल्लाह से बग़ावत करके जानबूझ कर गुनाह करने लगता हैं लेकिन इस्तेक़ामत यह है कि हालात कैसे भी हों वह इस्लामी अहकामात से रूगरदानी न करें। बल्कि दीन को साथ ले कर अपने मसाइल व परेशानियों को हल करने की कोशिश करे। इसलिए कि इर्शादे बारी है "बेशक! जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर जमे रहे तो ऐसों पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ही वोह लोग ग़मगीन होंगें। यह लोग ही जन्नत वाले है। जो उसमें हमेशा रहेंगें।" **(अहक़ाफ़–आयत–13–14)**

(9) अच्छा गुमान रखना :– एक अच्छा मुसलमान हर एक के साथ अच्छा गुमान रखता है। वह अपने दुश्मन के बारे में भी भला सोचता है। क्योंकि इर्शादे बारी है "ऐ ईमान वालों! तुम बहुत गुमान करने से बचो। बेशक! कुछ गुमान गुनाह हैं।" **(हुजुरात–आयत–12)** इसलिए कि "गुमान सबसे झूटी बात है और तुम चुपके–चुपके किसी की बात न सुनों, न जासूसी करो और अल्लाह के लिए भाई–भाई बन कर रहों।" **(सही अल जामेअ–2697 & मुस्लिम)**

Converter and Creator' on http://www.e-pdfconverter.com to rem

लेकिन अल्लाह की ना फ़रमानी करने और गुनाहों में मुलव्वस रहने वालों के साथ बदगुमानी करना वह बदगुमानी नहीं है, जिससे मना किया गया है। इमाम कुर्तुबी रह. फ़रमाते हैं "जिसका ज़ाहिर अच्छा हो, उसके बारे में बदगुमानी करना जाइज़ नहीं अलबत्ता जिसका ज़ाहिर बुरा हो उसके बारे में बद गुमानी करने में कोई हरज नहीं।" **(तफ़सीर कुर्तबी– सूरह हुजुरात–12)**

(10) ख़ैर ख़्वाही करनाः– एक अच्छा मुसलमान हर किसी के साथ भलाई का मामला करता है। हमेशा लोगों की भलाई चाहता है और उन्हें फ़ायदा पहुंचाने की कोशिश करता है क्योंकि यही दीने इस्लाम की तालीम है। जैसा कि इब्ने अब्बास रज़ि. कहते हैं "जब किसी बस्ती में बारिश होती है तो मुझे खुशी होती हैं। अगर चे मेरे जानवर वहां चरने नहीं जाते।" मगर आज के अक्सर मुसलमानों का हाल यह है कि वह ग़ैर तो दूर अपने सगे भाईयों को आगे बढ़ता व तरक़्क़ी करता देख खुश नहीं हो होते। आज लोगों में इन्सान से मुहब्बत करने व मदद करने का जज़्बा ख़त्म सा हो गया है। इसीलिए आज वोह अपने ही घरों में परेशान हैं। अगर कल उन्होंने अपने किसी भाई (इन्सान) की मदद की होती तो आज वह उनकी मदद कर रहा होता। हालांकि किसी मुसलमान का यह सोचना कि उसने मेरी मदद नहीं की तो क्यों मैं उसके काम आऊं? ख़ैर ख़्वाही के फ़रीज़े में कोताही व दुनियां में फ़साद की वजह है।

इन ख़ूबियों के अलावा यह भी है कि एक अच्छा मुसलमान झूट नहीं बोलता, चोरी नहीं करता, डाका नहीं डालता, किसी का माल ना जाइज़ तरीक़े से नहीं हड़पता, शराब नहीं पीता न किसी को शराब पिलाता है, न रिश्वत व सूद लेता है और न देता है, न तो ज़िना करता है और न किसी पर जुल्म ढ़ाता है हलाल खाता है व हराम से बचता है और लोगो को भली बातें बताता है व बुराई से रोकता है वग़ैरह।

हमारे नज़दीक़ ये वो ख़ूबियां हैं जो एक मुसलमान को न सिर्फ़ लोगों की नज़रों में इज़्ज़तदार बनाती हैं बल्कि ऐसे शख़्स से लोग मुहब्बत करते हैं और अल्लाह राज़ी होता है। इन ख़ूबियों व सिफ़ात पर अमल करने के बाद इन्सान में कई ख़ूबियां अपने आप दाख़िल हो जाती हैं।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें अच्छा इन्सान व अच्छा मुसलमान बनाए, हमारी ख़ताओं से दरगुज़र करे और हमसे राज़ी हो जाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलने की तौफ़ीक़ दे। आमीन !

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836639
09887239649

ve this message.